International Journal of Arts & Education Research

भारतीय सुरक्षा के लिए हिन्द महासागर का भू-स्त्रातिजिक स्वरूप

डॉ.सचिन कुमार श्रीवास्तव*[1]

[1]डी ए वी कॉलेज, देहरादून।

प्रारूप

पृथ्वी का तीन चौथाई भाग अर्थात् 367 मिलियन वर्ग किञ्मी0 क्षेत्र जल से घिरा है। मनुश्य ने थल के प-चात् जल का उपयोग आवागमन तथा व्यापारिक उपयोग के लिए करना प्रारम्भ किया। आज भी व्यापारिक तथा सैनिक गतिविधियों के लिए जल का उपयोग थल तथा वायु की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। वि-व के महासागरों में हिन्द महासागर का स्थान क्षेत्रफल की दृश्टि से तीसरा है। इसका क्षेत्रफल लगभग 7,25,20,000 वर्ग किमी0 है। यह वि-व के कुल जल क्षेत्र का 20,7 प्रति-ात है तथा पूरे ग्लोब के क्षेत्र का 14 प्रति-ात है। यह 10,400 किमी0 लम्बा तथा 9,600 किमी0 चौड़ा है। हिन्द महासागर की तटीय सीमा विस्तार लगभग 66,526 किमी0 है। हिन्द महासागर का विस्तार प्रशान्त महासागर का लगभग आधा तथा एटलांटिक महासागर से थोड़ा ही छोटा है।[1] यह भूमध्यसागर से लगभग 35 गुना बड़ा है। तीन तरफ से थल से घिरा यह महासागर मानचित्र तथा उपग्रह चित्रों में एक बड़े प्राकृतिक खाड़ी क्षेत्र की तरह प्रतीत होता है। तीन महाद्वीपों अफ्रीका, एि-या तथा आस्ट्रेलिया से घिरा होने के कारण हिन्द महासागर का भू-राजनीतिक एवं भू-स्त्रातिजिक महत्व बहुत अधिक है। यह वि-व का एक मात्र ऐसा महासागर है जिसका नाम इसके तटीय दे-ा से सम्बन्धित है।

हिन्द महासागर का क्षेत्रीय भौगोलिक विस्तार

उत्तर में-एशिया दक्षिण-एि-या, मध्य एि-या, फारस की खाड़ी दक्षिण में-अण्टार्कटिका तक पूर्व में-अफ्रीका महाद्वीप के पूर्वी किनारे तक पि-चम में-इण्डोनेि-या (सुमात्रा, जावा), आस्ट्रेलिया के पि-चमी तट तक हिन्द महासागर उत्तर में भारतीय प्रायद्वीप द्वारा दो क्षेत्रों अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी में विभाजित है। इसके उत्तर में स्थित तीन क्षेत्रों-लाल सागर, अरब सागर व फारस की खाड़ी का वि-ोश आर्थिक एवं स्त्रातिजिक महत्व है। हिन्द महासागर के पि-चमी भाग में स्थित केप-ऑफ-गुडहोप इसे अटलांटिक महासागर से तथा पूर्व में स्थित मलेि-या, इण्डोनेि-या तथा आस्ट्रेलिया इसे प्र-ान्त महासागर से अलग करते हैं।

हिन्द महासागर के क्षेत्रीय दे-ों में 48 पूर्ण स्वतन्त्र देश आते हैं। इसमें से मात्र 36 तटीय तथा द्वीप देश हैं। ोश 12 थल से घिरे दे-ा हैं।[2] इन 12 दे-ों को अपने आयात निर्यात के लिए पोर्ट-सुविधायें अपने पड़ोसी दे-ों से उपलब्ध होती हैं। भारत थल से घिरे अपने दो पड़ोसी दे-ों-नेपाल व भूटान को कोलकाता स्थित हल्दिया बन्दरगाह की सुविधायें, व्यापारिक कार्यों के लिए उपलब्ध कराता है। इन क्षेत्रीय दे-ों की जनसंख्या पूरे वि-व में एक वि-ोश स्थान रखती है।

हिन्द महासागर-क्षेत्रीय दे-ों को सात उप-क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ये क्षेत्र हैं :

1. दक्षिण पूर्वी अफ्रीका

2. पि-चमी हिन्द महासागर के द्वीप दे-ा
3. हार्न-आफ-अफ्रीका एवं लाल सागर
4. फारस की खाड़ी
5. दक्षिण - एशिया
6. दक्षिण-पूर्वी एशिया
7. आस्ट्रेलिया

इन उप-क्षेत्रों में आने वाले हिन्द महासागर तटीय देशों का विवरण इस प्रकार है-

1. दक्षिण पूर्वी अफ्रीका-दक्षिणी अफ्रीका, मोंजाम्बिक, तंजानिया, केन्या
2. पश्चिमी हिन्द महासागर के द्वीप देश- कोमोरो, मलागासी, मारीशस, से-ेल्स
3. हार्न-ऑफ्-अफ्रीका व लाल सागर- सोमालिया, जिबूँती, इरिट्रिया, सूडान, मिस्र, इजराइल, जार्डन, व यमन।
4. फारस की खाड़ी।
5. दक्षिण एशिया- भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालद्वीप।
6. दक्षिण पूर्वी एशिया- म्यांमार, थाईलैंड़, इंड़ोनेशिया, मलेशिया, ईस्ट तिमोर, सिंगापुर।
7. आस्ट्रेलिया।

हिन्द महासागर क्षेत्र में आज भी योरोप के दो देशों फ्रांस व ब्रिटेन के अधीन कुछ द्वीप क्षेत्र हैं। फ्रांस के नियंत्रण में पांच द्वीप रीयूनियन, सेंट्-पाल, एमस्टर्ड़म, केर्गुएलेन तथा क्रोजेट है। ये द्वीप पश्चिमी हिन्द महासागर क्षेत्र में स्थित है। इसमें से रीयूनियन द्वीप सबसे महत्वपूर्ण है यहां पर फ्रांसीसी नौ सेना का मुख्य अड्डा है। रीयूनियन मेड़ागास्कर (मलागासी) के पूर्वी तट से 569 मील, मारीशस से 120 मील डियागो-गार्-िया से 1600 मील, अदन से 2900 मील, तथा सशेल्स से 1000 मील, दक्षिण में स्थित है। डियागो-गार्शिया द्वीप का हिन्द महासागर क्षेत्र में वि-ोश स्त्रातिजिक महत्व है, जिस पर अमेरिका का अधिकार है। भारतीय तटीय सीमा पर 11 बड़े, 20 मध्यम तथा 144 छोटे आकार के बन्दरगाह स्थित है।[3]

ऐतिहासिक पृश्ठभूमि

हिन्द महासागर का प्राचीन इतिहास व्यापारिक एवं सांस्कृतिक दृश्टिकोण से अन्य दूसरे महासागरों की अपेक्षा कहीं अधिक समृद्धिशाली रहा है। प्राचीन काल से ही अटलांटिक एवं प्रशान्त महासागर क्षेत्र में व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आवागमन के लिए सामुद्रिक मार्गों का उपयोग प्रारम्भ हो गया था। यह सामुद्रिक आवागमन मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी हिन्द महासागर क्षेत्र के-मिस्र, हार्नआफ् अफ्रीका के दे-ों, फारस की खाड़ी के दे-ों, भारत के पि-चमी तट तथा बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के देशों के मध्य केन्द्रित था। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि पश्चिमी हिन्द महासागर क्षेत्र में मिस्र तथा फारस के शासकों का 2000 ईसा पूर्व में प्रभुत्व था। भारतीय सामुद्रिक गतिविधियों का

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

प्रारम्भ सिंधु घाटी सभ्यता के समय ही हो चुका था। मोहन-जोदड़ो से प्राप्त मुहरों से इस बात के स्पश्ट प्रमाण मिलते है। ये तीनों ही सभ्यतायें वि-व की प्राचीन सभ्यतायें है। बाद के समय में रोमन तथा अरब शासकों का प्रभुत्व इस क्षेत्र में बढ़ा। दक्षिणी पूर्वी हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत, मलाया व चीन का प्रभुत्व था।

पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा जुलाई 1497 ई0 में अपने देश पुर्तगाल से समुद्री यात्रा प्रारम्भ कर केप-आफ-गुड़होप होते हुए मार्च 1498 ई0 में मोजांम्बिका पहुँचा। यहाँ से मध्य हिन्द महासागर क्षेत्र से होता हुआ वह 27 मई, 1498 ई0 में भारत के कालीकट बन्दरगाह पहुँचा। वास्कोडिगामा की यात्रा से पुर्तगाली :ाासकों का हिन्द महासागर क्षेत्र के तटीय व द्वीप देशों के प्रति आकर्शण बढ़ा। आगे के वर्शों में हिन्द महासागर का नियंत्रण व प्रभुत्व धीरे-धीरे योरोपीय दे-ों के हाथों में चला गया। यह नियन्त्रण लगभग 450 वर्शों तक कायम रहा ।

योरोप से सबसे पहले पुर्तगाली हिन्द महासागर क्षेत्र में पहुँचे। पुर्तगाली बहुत अच्छे नाविक थें। उन्होंने बहुत से द्वीपों तथा दशों पर अधिकार कर लिया भारतीय तट पर उन्होंने 1503 ई0 में कोचीन का युद्ध तथा 1509 ई0 में ड़यू का युद्ध लड़ा। 1503 ई0 में पुर्तगाली नौ सेना कोचीन के पास कासिम के नेतृत्व में भारतीय नौ सेना से बुरी तरह पराजित होकर वापस लौट गयी। पुनः 1509 ई0 तक पुर्तगाली किसी तरह भारतीय तट तक पहुँच सकें। धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने दीव, दमन, बसई, चौल व सानथामी आदि स्थानों पर अपना कब्जा जमा लिया।[5] पुर्तगाली कभी भी पूरे हिन्द महासागर क्षेत्र को अपने नियंत्रण में नहीं ले सके इसका कारण यह था कि उनके :ाासकों ने पर्याप्त नौ-सेना इस क्षेत्र के लिए नहीं भेजी फलस्वरूप बाध्य होकर उन्होंने केवल स्त्रातिजिक महत्व के स्थानों पर अपना नियंत्रण रखा। जैसे मल्लका, सकोत्रा, आर्मुज, गोवा, सीलोन, मुम्बासा, तिमोर। 1604 ई0 में मालावार के :ाासक जमोरिन ने हालैण्ड के एडमिरल बोडर हेगेन के साथ व्यापारिक समझौता किया। इसका एक उद्दे-य पुर्तगालियों को भारतीय तटों से हटाना भी था। पुर्तगालियों का 16वीं :ताब्दी के अंत तक इन जगहों पर नियंत्रण था गोवा को 1961 ई0 में पुर्तगालियों के अधिकार से मुक्त कराया गया था।

डचों ने 1641 ई0 में पूर्वी हिन्द महासागर स्थित मल्लका जलमार्ग के पास पुर्तगालियों को हरा कर अपना अधिकार कर लिया हिन्द महासागर क्षेत्र में डचों का मुख्य उद्दे-य व्यापारिक था उन्होंने आस्ट्रेलिया की खोज की लेकिन उसे व्यापार के लिए उपयुक्त न पाकर छोड़ दिया।

ि-वाजी ने अपना सैनिक जीवन 1646 ई0 में प्रारम्भ किया। ि-वाजी में काफी दूरदर्ि-ता थी। उन्होंने कोकंण तटों पर सुदृढ़ नौ-सेना का विकास करवाया। मराठा नौ सेना का विकास 1659 ई0 में प्रारम्भ हुआ इस समय मराठों ने अपने कुछ जलयानों को कल्याण व भिवन्डी नामक स्थानों पर रखा।[6] बाद में जैसे-जैसें मराठा थल :ाक्ति बढ़ी वैसे-वैसे नौ सेना को भी सुदृढ किया गया। पूरे मालावार तटों पर मराठा नौ सेना का नियंत्रण था 1683ई0 में मराठा नौ सेना के एडमिरल सिद्धोजी गुजर के नेतृत्व में कोकंण तट के दो स्त्रातिजिक महत्व के स्थानों सुर्वणदुर्ग तथा विजयदुर्ग पर अधिकार कर लिया गया। कोलाबा को एक :ाक्ति-ाली नौसैनिक अड्डे के रूप में विकसित किया गया।

31 दिसम्बर, 1600 ई0 को तत्कालीन ब्रिटि-ा महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को व्यापारी के रूप में पूर्वी दे-ों में व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया। इसके प-चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापारिक कार्य हेतु हिन्द महासागर क्षेत्र में अपना प्रसार प्रारम्भ किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का ब्रिटि-ा नौ सेना के निर्माण में महत्वपूर्ण

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

योगदान रहा। इस कम्पनी का पहला व्यापारिक केंद्र सूरत में 1607 ई0 में स्थापित हुआ। इस समय भारतीय पि-चमी समुद्री तट की तरफ पुर्तगालियों का नियन्त्रण व प्रभाव था पुर्तगालियों ने अंग्रेंजों को इधर से भगाने के अनेकों प्रयास किये किन्तु उनकी नौ सेना अंग्रेजो की नौ सेना की तुलना में कमजोर थी। फलस्वरूप वे अंग्रेजों के प्रसार को रोकने में असफल रहें। 1615 ई0 में गोवा के पुर्तगाली गर्वनर ने स्वयं एक बड़ी नौ सेना के साथ अंग्रेजों को हटाने के लिए प्रयत्न किया लेकिन वह भी अंग्रेजों की जल-ाक्ति का मुकाबला न कर सका। 1622 ई0 में अंग्रेजों ने फारस की खाड़ी क्षेत्र में निर्णायक पहल करते हुए फारस के :ाासकों की मदद से एक महत्वपूर्ण नौ सैनिक अभियान में पुर्तगालियों को हराकर हार्मुज जल क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। पुर्तगाली नौ सेना यहाँ से पूरी तरह हटकर गोवा की तरफ चली गयी। इस निर्णायक विजय के प-चात हिन्द महासागर क्षेत्र में अंग्रेजो का प्रसार बिना किसी बड़े गतिरोध के आगे के वर्शो में होता चला गया। औद्योगिक क्रांति के कारण अंग्रेज अधिक से अधिक हिन्द महासागर तटीय दे-ों को अपना उपनिवे-ा बनाते चले गये । इन सब की सुरक्षा के लिए उन्होंने अपनी नौ सेना का भी विस्तार तथा आधुनिकीकरण किया। अंग्रेजों ने हिन्द महासागर क्षेत्र के स्त्रातिजिक महत्व के स्थानों पर नौसैनिक सुविधाओं का विस्तार किया जिससे उनकी नौ सेना को किसी भी आपात् स्थिति में आव-यक सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। अंग्रेजों की व्यापारिक एवं नौ सैनिक गतिविधियों को फ्रांसीसीयों ने हिन्द महासागर क्षेत्र में कई बार चुनौती देने का प्रयास किया दोनों नौ सेनाओं के मध्य कई बार संघर्श हुये। लेकिन ब्रिटि-ा व्यापारिक एवं सैनिक जहाजी बेड़ों का सामना फ्रांस कभी नहीं कर सका 1782 ई0 में अंग्रेजों ने फ्रांसीसीयों को निर्णयक रूप से हरा कर पूरे हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी स्थिति और अधिक सुदृढ़ कर ली।

1759 ई0 में मल्लका जलडमरूमध्य पुर्तगालियों से तथा 1781 ई0 में ट्रिकोंमाली डचों से अपने अधिकार में कर लिया। 1815 ई0 की पेरिस सन्धि में हिन्द महासागर क्षेत्र में ब्रिटेन को केप क्षेत्र मारी-ास व सीलोन (श्रीलंका), डचों को इण्डोनेि-िया तथा फ्रांस को री-यूनियन द्वीप क्षेत्र, मिला। प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26) ई0 के प-चात् अंग्रेजों ने बर्मा को अपने अधीन कर लिया। 1857 ई0 की क्रांति (प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम) के प-चात् अंग्रेजों ने नवम्बर 1858 ई0 में भारत का :ाासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी से अपने अधीन कर लिया। भारत में कम्पनी सेना ब्रिटि-ा ताज के अधीन हो गयी। इस प्रकार भारत भी ब्रिटिश उपनिवश-ा बन गया। अंग्रेजों ने पूर्वी हिन्द महासागर क्षेत्र के महत्वपूर्ण जलमार्ग मल्लका की सुरक्षा के लिए 1824 ई0 में सिंगापुर को बसाया। आस्ट्रेलिया पर अंग्रेजों का पहले से ही अधिकार था। इसी समय यह पता चला कि आस्ट्रेलिया में सोना बहुत अधिक मात्रा में है। इस खोज से काफी बड़ी संख्या में अंग्रेज आस्ट्रेलिया में जाकर बसने लगे। 1839 ई0 में ब्रिटेन ने अदन को अपने अधीन कर लिया। अदन पि-चमी हिन्द महासागर क्षेत्र में लाल सागर के दक्षिणी किनारें पर स्थित है। इसका स्त्रातिजिक महत्व 1869 ई0 में बहुत बढ़ गया था। जब ब्रिटेन तथा फ्रांस के संयुक्त प्रयास से स्वेज नहर को यातायात के लिए खोल दिया गया। स्वेज नहर से मिस्र का भी स्त्रातिजिक महत्व बहुत अधिक बढ गया। फलस्वरूप ब्रिटेन ने मिस्र पर भी अधिकार कर लिया इस प्रकार स्वेज नहर से लेकर मल्लका तक का महत्वपूर्ण समुद्री जल मार्ग पूरी तरह से अंग्रेजों के नियन्त्रण में हो गया। इस जल मार्ग की सुरक्षा के लिए अंग्रेजों ने अदन, आर्मुज, मुम्बई, ट्रिकोमाली तथा सिंगापुर में शक्तिशाली नौ सैनिक अड्डे स्थापित किये। स्वेज नहर तथा केप-ऑफ-गुडहोप के मध्य के जल मार्ग में सूडान पर भी अंग्रेजों का अधिपत्य था।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45 ई0) के दौरान जापानी नौ सैना 1942 ई0 में बंगाल की खाड़ी तक आई उसने ब्रिटि-श क्रूजर कार्नवेल व डेजटश-ाइन के साथ एक छोटे वायुयान वाहक पोत 'हर्मीज' को डुबों दिया। बाध्य होकर बंगाल की खाडी क्षेत्र से 'ब्रिटिश रॉयल नेवी' भी पि-चम की तरफ पीछे हट गयी।[8] अमेरिकी नौ सैना ने प्रशान्त महासागर में कोरल समुद्र तथा मिडवेद्वीप समुह के पास जापानी नौ सैना को बुरी तरह पराजित कर दिया। इससे बाध्य होकर जापानी नौ सैना बंगाल की खाड़ी क्षेत्र वापस लौट गयी।

भारतीय सुरक्षा का प्रारूप-1947 के पूर्व की जल-ाक्ति

भारतीय नौ सेना का प्रारम्भ खोजने पर हम 1612 ई0 तक जा पहुंचते है। जब ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' के चार जहाजी बेड़े सूरत आये थे। प्रारम्भ में इनका नाम "बोम्बे मेरिन्स" रखा गया था। 1830 से 1862 तक उसका नाम 'इण्डियन नेवी' था। पर 1877 में पुर्नगठन के बाद उसका बदल कर 'इण्ड़ियन मेरिन्स' कर दिया गया। 15 साल बाद 1892 में इसका नाम 'रॉयल इण्ड़ियन मेरिन्स' कर दिया गया। 1934 में 'रॉयल इण्ड़ियन नेवी' की स्थापना की गयी। जिसका मुख्यालय बम्बई की नौ सैनिक गोदी को बनाया गया। और भारतीय समुद्र की रक्षा का भार 'रॉयल इण्ड़यन नेवी' को सौंप दिया गया। 1937 में इनके पास केवल छः या सात छोटे मोटे जहाज थे, जिनमें एक हिन्दुस्तान सर्वे का जहाज और एक पेट्रोल का। इस समय नौ सेना में कुल 170 अफसर और 1100 नाविक थे। 1928 में इन जहाजों को युद्धपोत के रूप में बदल दिया गया। इस काल में पाँच प्रि-क्षण कालेज थे, किन्तु ट्रेनिंग हेतु अफसरों को इंग्लैड भेजा जाता था।

भारतीय सुरक्षा का प्रारूप-1947 के बाद भारत की जल-ाक्ति

भारत में दिसम्बर 1982 में अंतर्राश्ट्रीय समुद्र-विधि अभिसमय पर हस्ताक्षर कर इसे जून 1995 में अनुमोदित किया। इस नयी 'समुद्र विधि' से भारत का सामुद्रिक क्षेत्र 83,200 वर्ग किलोमीटर से बढ़ कर 2,02-2,2 मिलियन वर्ग किलोमीटर का हो गया है। इसमें यह अन्तर इसलिए है क्योंकि कहीं-कहीं पर समुद्री सीमा निर्धारित नहीं है तथा हाईड्रोग्राफिक त्रुटियाँ भी हैं। यह भारतीय थल क्षेत्र का दो तिहाई भाग है। अन्तर्राश्ट्रीय समुद्र-विधि के द्वारा वर्श 2004 में महाद्वीपीय मग्न तट क्षेत्र 200 समुद्री मील से बढ़ कर 350 समुद्री मील हो गया। भारतीय समुद्री क्षेत्र 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर और बढ़ गया। ऐसी स्थिति में भारतीय नौ सेना तथा तट रक्षक बल की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। पि-चमी नौ सेना कमाण्ड के तत्कालीन प्रमुख जे0एस0 बेदी ने इस स्थिति के लिए ठीक ही कहा है कि, 'बढ़े हुए महाद्वीपीय मग्न तट क्षेत्र की सुरक्षा हेतु हमें और अधिक :ाक्ति की आव-यकता होगी'।

इसके लिए 'नौ सेना' के अतिरिक्त "सामुद्रिक निगरानी दल" की भी आव-यकता होगी। भविश्य में जैसे-जैसे समुद्र विज्ञान का विकास होगा वैसे-वैसे सामुद्रिक संसाधनों का दोहन बढ़ेगा अर्थात भविश्य में राश्ट्र को सामुद्रिक निगरानी कार्य पर और अधिक धन व्यय करना होगा भारत में समुद्री तटीय क्षेत्रों से अवैधानिक घुसपैठ, आतंकवादी एवं तस्करी की समस्या अधिक है इन्हीं कार्यो के लिए "भारतीय तट रक्षक बल" की स्थापना 19 अगस्त 1978 को एक स्वतन्त्र पैरामिलिट्री सेवा में रूप में सामुद्रिक एवं अन्य राश्ट्रीय हितों की सुरक्षा हेतु कोस्ट गार्ड एक्ट के अन्तर्गत की गयी । यह बल भारतीय रक्षा मन्त्रालय के पूर्ण नियंत्रण में हैं। इस बल ने उच्च संवेदन-ाील क्षेत्रों में राश्ट्रीय हितों की प्रभाव-ाली ढंग से सुरक्षा की है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

‘‘भारतीय कोस्ट गार्ड“ का कुल संख्या बल 4220 है। इसमें 750 अधिकारी भी शामिल हैं। इसका नियंत्रण ”डाइरेक्टर जनरल“ (वाइस एडमिरल) द्वारा होता है। ‘भारतीय तट रक्षक बल’ का आपरे-ानल कमाण्ड मुख्यालय नयी दिल्ली में स्थित हैं। इसके तीन क्षेत्रीय मुख्यालय मुम्बई, चेन्नई, तथा पोर्ट ब्लेयर में स्थित है।

‘तट रक्षक बल’ के अतिरिक्त भारतीय नौसेना के पास एंटी सबमैरीन आपरे-ान हेतु आठ ”टी0यू0-142एम0“ तथा तीन ”आई0एल0-38“ वायुयान हैं। पहले पाँच आई एल-38 वायुयान भारतीय नौसेना के पास थे। लेकिन अक्टूबर 2002 में दो वायुयान उड़ान के दौरान गोवा के पास आपस में लड़ कर नश्ट हो गये। इन वायुयानों का मुख्य कार्य सामुद्रिक निगरानी नहीं है। लेकिन किसी भी आव-यकता के समय इन्हें सामुद्रिक निगरानी कार्य के लिए लगाया जा सकता हैं।

आई0एल0-38 वायुयानों को वर्श 1977 में पूर्व सोवियत संघ से खरीदा गया था। इन वायुयानों की अधिकतम गति 500 किलोमीटर तथा उड़ान ऊंचाई 8000 मीटर है। ये वायुयान 16 घन्टे तक आका-ा में लगातार उड़ान भर सकते हैं। इनसे टी0यू0-142 एम0 वायुयान अधिक उन्नत है। टी0यू0-142 एम0 वायुयानों को भी वर्श 1986 में पूर्व सोवियत संघ से खरीदा गया था। ये दोनों वायुयान ”एंटी सबमैरीन वारफेयर“ के लिए उपयोगी हैं।

ये दोनों वायुयान अब काफी पुराने पड़ चुके हैं। इन्हें तत्काल बदलने की आव-यकता है। भरतीय नौसेना अपनी निगरानी व ”एटी सबमैरीन वारफेयर“ की क्षमता बढ़ाने के लिए अमेरिकी ”ओरियन“ (व्तपवद) वायुयानों को खरीदने के लिए प्रयासरत हैं। भारतीय नौसेना कम से कम 10 ओरियन वायुयान लेना चाहती है। क्योंकि अब पुराने पड़ चुके आई0एल0-38 व टी0यू0-142 एम0 वायुयानों के उचित रख-रखाव के लिए रूसी कम्पनियों से आव-यक स्पेयर कलपुर्जे उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। अमेरिकी नौसेना इन ”ओरियन“ वायुयानों का अब सीमित उपयोग कर रही है। इसके स्थान पर अब अमरिकी नौसेना उन्नत ”पी0-3सी0 ओरियन“ वायुयानों का उपयोग कर रही है।

नौसेनाध्यक्ष एडमिरल माधवेन्द्र सिंह ने 29 नवम्बर, 2003 को ने-ानल डिफेंस एकेडमी ”खड़ग्वासला“ में 105 वीं पासिंग आउट परेड को सम्बोधित करते हुए इस बात पर जोर दिया भारत को लम्बी दूरी के सामुद्रिक पेट्रोल एवं ए0एस0डब्लू0 वायुयानों की आव-यकता है।

विश्व में कुछ द-ाकों से सामुद्रिक निगरानी एवं टोही कार्य हेतु ”मानवरहित वायुयान“ (यू0ए0वी0) का प्रयोग बढ़ रहा है। गल्फ युद्ध 1991, अफगानिस्तान युद्ध 2003 तथा गल्फ युद्ध 2003 में अमेरिकी नौ सेना ने विभिन्न प्रकार के मानवरहित वायुयानों का सफलतापूर्वक उपयोग किया। अमेरिकी नौ सेना ने द्वितीय गल्फ युद्ध के समय ”ग्लोबल हाक“ (ळसवइंस भ्वा) नामक मानवरहित वायुयान का बड़े पैमाने पर उपयोग किया था। यह काफी ऊंचाई पर लम्बी दूरी तक उड़ान भरने वाला यू0ए0वी0 है। यह 24 घण्टे तक उड़ान भर सकता है। इसके अतिरिक्त अमेरिकी नौसेना ने ”सिल्वर फाक्स“ तथा ”ड्रेगेन आई“ नामक छोटे यू0ए0वी0 का भी काफी उपयोग किया।

वि-ााल अपवर्जित आर्थिक क्षेत्र तथा गहरे समुद्रों की निगरानी एवं टोही कार्य हेतु उपग्रह एक वि-वसनीय प्लेटफार्म हैं। ध्रुवीय कक्षा के उपग्रह लगातार एक नि-िचत समयान्तराल के प-चात् उस क्षेत्र की सूचनाएं उपलब्ध कराते रहते हैं। अब भू-केन्द्र के सुपर कम्प्यूटर उपग्रह सूचनाओं के द्वारा परिवर्तनों को लगातार मॉनीटर करते रहे हैं। इन्हीं परिवर्तनों के द्वारा विभिन्न प्रकार की सूचनायें प्राप्त की जाती हैं। एक ध्रुवीय कक्षा का उपग्रह 30 मिनट में पूरे

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

हिन्द महासागर क्षेत्र को पार कर जायेगा तथा किसी देश के अपवर्जित आर्थिक क्षेत्र को पार करने के लिए उसे कुछ ही मिनट चाहिए।

समुद्र तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा

राजनयिक कार्यो में नौ सेना :ाान्ति काल में दूसरे दे-ा की सद्भावना यात्राओं पर जाती है। तथा दूसरे दे-ों से अपने दे-ों की सद्भावना यात्रा पर आये युद्धपातों का स्वागत करती हैं। अपनी कार्यक्षमता व कार्य कु-ालता को बढ़ाने के लिए नौ-सेना दूसरे दे-ों की नौ सेना के साथ विभिन्न स्तरों तथा प्रकार के नौसेनिक अभ्यास कार्यक्रमों को भी आयोजित करती हैं। नौ सेना के "इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू" कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं। इन सब कार्यों का मुख्य उद्दे-य अपने नौ सैनिक क्षमता से दूसरे दे-ों को अवगत कराना है। यह राश्ट्रीय नीति के प्रचार का भी एक प्रभाव-ाली माध्यम है। निगरानी तथा चौकसी का कार्य मुख्य रूप से नौसेना के अंग "तट रक्षक बल" का है। लेकिन शांति काल में नौ सेना भी आवश्यकता के अनुसार इन कार्यो को करती है तथा राश्ट्रीय सामुद्रिक नीति व विकास में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करती है।

नौ सैनिक कार्यों में मुख्य रूप से युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति में सामुद्रिक नियन्त्रण, समुद्री नाकेबन्दी तथा :ात्रु नौसेना के साथ सीधा संघर्श करना है। भारतीय नौसेना ने 1965 व 1971 के भारत-पाक युद्धों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। कारगिल युद्ध के समय भारतीय नौसेना किसी भी परिस्थिति का सामना करने हेतु तैयार थी। भारतीय नौसेना अरब सागर में गल्फ मुहाने के पास रूकी हुई थी ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह पाकिस्तान की सामुद्रिक नाकेबन्दी प्रभावी ढंग से कर सके। इस समय भारतीय वायुयान वाहक पोत "विराट" भी पूरी तरह से आपरे-ानल् था। सेना की "एम्फीबियस इकाई" (उचीपइपवने न्दफजे) को भी अण्डमान निकोबार द्वीप से हटा कर अरब सागर पहुँचा दिया गया था। इन्हीं सब तैयारियों को देखकर पाकिस्तान समुद्र की तरफ से कोई दुस्साहस नहीं कर सका।

मालद्वीव अरब सागर में स्थित है। यह बहुत कम विकसित द्वीप दे-ा है। इसमें 1190 द्वीप है। जिसमें केवल 200 द्वीपों पर आबादी हैं बाकी 990 द्वीप निर्जन हैं। इसका कुल क्षेत्रफल 298 वर्ग किमी है। मालद्वीप की केवल 28 वर्ग किमी0 भूमि ही खेती योग्य हैं यहां के आय का मुख्य स्रोत पर्यटन है। इस द्वीप देश की सुरक्षा उत्तरदायित्व अप्रत्यक्ष रूप भारतीय नौसेना का ही है। त्रिवेन्द्रम से 40 मिनट की उड़ान से मालद्वीप पहुँचा जा सकता है।[17]

श्रीलंका में 1971 में आपातकाल के दौरान भारत सरकार ने श्रीलंका सरकार को "जनता विमुक्ति पेरुनुमा" (जे0वी0पी) नामक माओवादी आतंकवादी संगठन को दबाने में सैनिक सहायता दी थी। उस समय वायुसेना के साथ पॉच भारतीय फ्रिगेट को श्रीलंका भेजा गया था नौसेना का मुख्य कार्य समुद्री की तरफ से आतंकवादियों को मिलने वाले हथियारों तथा अन्य सामानों की आपूर्ति को रोकना था जिसे भारतीय नौ सेना ने सफलता पूर्वक 1971 तक पूरा किया बाद में भारतीय नौ सेना को वापस बुला लिया 29 जुलाई, 1987 के भारत-श्रीलंका समझौते के द्वारा भारतीय :ांति स्थापना बल (आई0पी0के0एफ0) उत्तरी व पूर्वी श्रीलंका में लिट्टे उग्रवादियों के विरूद्ध भेजी गयी। इस समय भारतीय नौ सेना को दो मुख्य कार्य सौपे गये तथा ट्रिकोमाली बन्दरगाह भारतीय नौ सेना के लिए खोल दिया गया। इस अभियान में ट्रांसपोर्ट व आपूर्ति सम्बन्धी मदद पहुँचाना एवं स्थल सेना को सक्रिय सहायता पहुँचाना भी शामिल थे।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

मार्च 1990 में भारतीय नौ सेना व कोस्ट-गार्ड की कुछ इकाईयां तथा श्रीलंका की नौ सेना ने मिलकर संयुक्त रूप से "पाल्क जलडमरूमध्य" क्षेत्र का निगरानीं कार्य किया इधर से तमिल विद्रोहियों का हथियारों व अन्य दूसरे सामानों की आपूर्ति नहीं हो सकी।

भारतीय नौ सेना के दो युद्धपोतों ने सितम्बर 1992 से संयुक्त राश्ट्र शांति स्थापना बल के साथ "सोमालिया" में वर्शो तक सहायता एवं राहत कार्य पहुँचाने का कार्य किया। इस अभियान के दौरान इन युद्धपोतों ने अमेरिका, कनाडा, इटली तथा फ्रांस के युद्धपोतों के साथ संयुक्त बहुपक्षीय नौ-सैनिक अभ्यास भी किया। भारतीय नौ-सेना के तीन युद्धपोत दक्षिणी सोमालिया के "किसिमयों" बन्दरगाह के पास लगे थे, जिससे वे वहाँ पर गये 5000 भारतीय थल सैनिकों को सहायता पहुँचा सकें।

आर्थिक हित एवं सामुद्रिक सुरक्षा की रणनीति

भारतीय सुरक्षा व विकास के लिए नौसेना के विस्तार के साथ ही साथ निम्नलिखित पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

1 इस प्रकार की उन्नत तकनीकी का विकास किया जाये जिससे भविश्य में अधिक से अधिक समुद्री संसाधनों का दोहन किया जा सकें।[21] इसके लिए भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध करा सकता है।

2 भारतीय द्वीप समूहों में सिंगापुर व हांगकांग के मॉडल पर मुक्त व्यापार क्षेत्र विकसित किया जाये। इससे वह व्यापार एवं पर्यटन दोनों का विकास होगा। दे-ा को विदे-ाी मुद्रा और रोजगार उपलब्ध हो सकेगा। इसका कोई भी बुरा प्रभाव भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था व उद्योगों पर नहीं पड़ेगा क्योंकि ये द्वीप समूह क्षेत्र भारतीय मुख्य भूमि से बिल्कुल अलग तथा दूर स्थित है। साथ ही यहां की आबादी बहुत कम है। जिसे आव-यकता पड़ने पर अन्यत्र कहीं भी बसाया जा सकता है।

3 मल्लका अंतर्राश्ट्रीय जलमार्ग के पास स्थित अण्डमान निकोबार द्वीप समूह के पास से होकर प्रतिवर्श हजारों की संख्या में जलयान (व्यापारिक व युद्धपोत) गुजरते है। अतः यहां जलयान निर्माण, मरम्मत पुराने जलयानों को तोड़ने के उद्योगों का विकास किया जा सकता है इस क्षेत्र से दे-ा को रोजगार व विदे-ाी मुद्रा प्राप्त हो सकती है। आज इस क्षेत्र में भारत का वि-व में कोई स्थान नहीं है।

4 हिन्द महासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग को विभिन्न आर्थिक संगठनों के माध्यम से बढ़ाने की अत्यन्त आव-यकता है। इससे बाहरी :क्तियों की भूमिका को सीमित किया जा सकता है। तथा क्षेत्रीय विवादों को शान्तपूर्ण तरीके से हल भी किया जा सकता है।

5 भारत को इस प्रकार के सूचना व निगरानी उपग्रह अन्तरिक्ष में लगाना चाहिए जिससे पूरे हिन्द महासागर क्षेत्र की लगातार निगरानी का कार्य किया जा सके यह निगरानी कार्य भारतीय राश्ट्रीय सुरक्षा की दृश्टि से अत्यन्त आवश्यक है। इससे भारत अपने अपवर्जित आर्थिक क्षेत्र का और अधिक बेहतर ढंग से प्रबन्धन कर सकेगा।

6 विश्वासोत्पादक कार्यक्रमों के रूप में अपनी नौसेना के पोतों का दूसरे दे-ों की सद्भावना यात्रा तथा इस प्रकार के उद्देश्य से अपने यहाँ आये दूसरे देशों के नौ-सैनिक युद्ध पोतों के स्वागत कार्यक्रमों को और अधिक बढाने की

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

आवश्यकता है। साथ ही क्षेत्रीय व बाहरी नौ-सैनिक शक्तियों के साथ अपनी नौसेना के संयुक्त अभ्यास कार्यक्रमों को और अधिक आयोजित करने की आवश्यकता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी नौसेना को विभिन्न आधुनिक युद्धपोतों, उपकरणों मुख्य रूप से संचार व नियन्त्रण के इलेक्ट्रोनिक सिस्टमों तथा नौसैनिक समरतांत्रिक चालों का प्रशिक्षण प्राप्त हो पाता है। नौसेना की कार्यकुशलता नि-चय ही इन अभ्यासों से बढ़ती है।

7 भारतीय नौसेना के काफी युद्धपोत व पनडुब्बियाँ पुरानी पड़ चुकी है। इन सब को यथाशीघ्र क्रमवार तरीके से बदलने की आवश्यकता है। क्योंकि इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि-

श्दजपुनमे पद जीम उनेमनउ उंल मदतपबी ं दंजपवद बनसजनतंससलए इनज ंदजपुनमे पद जीम ंतपेमदंस नदकमत बनज बवनदजतलश्े कममिदबम बंचंइपसपजलण्- संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज भी हिन्द महासागर पहले की ही भांति भारतीय सुरक्षा एवं विकास का एक प्रमुख आधार है। इस क्षेत्र में भारतीय इतिहास, भौगोलिक स्थिति व चुनौतियों को देखते हुए यह आव-यक है कि भारतीय नौ-सेना अपनी क्षेत्रीय श्रेश्ठता बनाये रखे तथा इस प्रकार से अपना विकास करे कि किसी भी संकट के समय दूर गहरे समुद्रों में जाकर स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सके। भारतीय सरकार की नौ-सैनिक नीतियां एवं स्त्रातिजिक योजनाएं इस दि-ा में अग्रसर है। हिन्द महासागर तटीय दे-ों में भारतीय नौसेना ही स्त्रातिजिक भूमिका अदा कर सकने की क्षमता रखती है। एि-या में भारत की स्त्रातिजिक भूमिका का प्रभाव 21वीं :ताब्दी में तेजी से विस्तृत हो रहा है। सामुद्रिक हितों की सुरक्षा हेतु स-क्त नौसेना का होना आव-यक है। भारतीय नौसेना का पिछला इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। आगे भविश्य में भी यह दे-ा की सुरक्षा एवं गौरव का अटल प्रतीक बनी रहेगी।[22]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रशान्त महासागर का क्षेत्रफल 16,69,59,000 वर्ग किमी0 तथा एटलांटिक महासगार का क्षेत्रफल 80,4,19,000 वर्ग किमी हैं-आक्सफार्ड स्कूल एटलस, आक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी प्रेस, 1997, पृश्ठ 59

2. डॉ0 हरीशरण-हिन्द महासागर पेज 13-14 प्रकाशक चन्द्र प्रका-ा एण्ड कम्पनी, हापुड़।

3. प्रो0 जगदीश सिंह एवं डॉ0 के0एन0 सिंह-हिन्द महासागर तटीय प्रदे-ा पृश्ठ संख्या 02 प्रकाशक ज्ञानोदय प्रका-ान, 234 गोरखपुर।

4. प्रगति मंजूशा दिसम्बर/97 पृश्ठ, संख्या, 103, आवरण, कोलारॉड, इलाहाबाद।

5. श्री राधाकान्त भारती, "भारतीय सेना-परम्परा और स्वरूप", बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना, 1973 पृश्ठ संख्या 155

6. मेंजर एल्फ्रेड डेविड, इण्डियन आर्ट-ऑफ वार, आत्माराम दिल्ली 1953 पृश्ठ, संख्या 24

7. डॉ0 हरीशरण-हिन्द महासागर पृश्ठ संख्या 8, 9 प्रकाशक चन्द्र प्रकाश एण्ड़ कम्पनी हापुड़।

8. तदैव डॉ0 हरी-ारण हिन्द महासागर-पृश्ठ, 10

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

9. डॉ0 लल्लन जी सिंह-भारतीय सैन्य इतिहास और युद्ध के सिद्धान्त पृश्ठ, संख्या 227 प्रकाशक प्रकाश बुक डिपो बड़ा बाजार बरेली।

10. आर0 प्रसन्ना, पुलिसिंग दि ब्लू वाटर, द वीक, 14 सितम्बर 2003 पृश्ठ, संख्या, 16

11. स्ट्रैटिजिक डाइजेस्ट, आई0डी0एस0ए0, नई दिल्ली, नवम्बर 2002 पृश्ठ, संख्या, 1385

12. स्ट्रैटिजिक डाइजेस्ट, आई0डी0एस0ए0, नई दिल्ली, जनवरी 1986 पृश्ठ, संख्या, 72

13. द हिन्दू, नई दिल्ली, 10 सितम्बर 2003

14. टाइम्स ऑफ इण्डिया, लखनऊ, 30 नवम्बर 2003

15. डिफेन्स वीक, 22 सितम्बर, 2003

16. डॉ0 हरी-रण-हिन्द महासगार पृश्ठ संख्या, 101, प्रका-क, चन्द्र प्रका-न एण्ड कम्पनी, हापुड़।

17. प्रकाश चन्द्र-एन ओवरव्यू ऑफ् दि इकोनामी मालदीप एण्ड हर ट्रेड विद् इंण्डिया स्ट्रैटिजिक एनालिसिस् वाल्यूम ग्टप् न0 9, 1994, पृश्ठ, संख्या, 432

18. डॉ0 हरीशरण -हिन्द महासागर पृश्ठ, संख्या, 123

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.